संस्कृत
कक्षा–12

सामान्य निर्देश – संस्कृत विषय में 100 अंकों का एक प्रश्नपत्र होगा। प्रश्न–पत्र के प्रत्येक खण्ड में निर्धारित अंकों के अन्तर्गत दीर्घ उत्तरीय, लघु उत्तरीय, एवं बहुविकल्पीय प्रश्नों का समावेश कर कई प्रश्न पूछे जा सकते हैं। प्रश्नपत्र में प्रश्नों के लिए निर्धारित अंक ही उत्तर के आकार की संक्षिप्तता या दीर्घता का द्योतक होगा। प्रत्येक प्रश्नपत्र के अन्तर्गत समाविष्ट पाठ्यक्रम का अंक विभाजन निम्नवत् होगाः–

खण्ड–क (गद्य) 20 अंक

चन्द्रापीडकथा पूर्वार्द्ध –('सा तु समुत्थाय महाश्वेतां.....आगन्तव्यम्'' इत्यादिश्य व्यसर्जयत्' तक)

1.	गद्यांश के आधार पर प्रश्नोत्तर।	10 अंक
2.	कथात्मक पात्रों का चरित्रचित्रण (हिन्दी में, अधिकतम 100 शब्द)।	4
3.	रचनाकार का जीवनपरिचय एवं गद्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)।	4
4.	सन्दर्भित पुस्तक से सम्बन्धित बहुविकल्पीय प्रश्न।	2

खण्ड–ख (पद्य) 20 अंक

रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः)– (श्लोक संख्या–41 से 64 तक)

1.	किसी श्लोक की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या।	2+5=7
2.	किसी श्लोक की सन्दर्भसहित संस्कृत में व्याख्या।	2+5=7
3.	कवि–परिचय एवं काव्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)।	4
4.	काव्यगत तथ्यों एवं भावों पर आधारित बहुविकल्पीय प्रश्न।	2

खण्ड–ग (नाटक) 20 अंक

अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)

1.	पाठगत नाटक के किसी गद्यांश अथवा पद्य की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या।	2+5=7
2.	पाठगत नाटक के अंशों से सूक्तिपरक पंक्ति की सन्दर्भसहित हिन्दी में व्याख्या।	2+5=7
3.	नाटककार का जीवन परिचय एवं नाट्यशैली (हिन्दी अथवा संस्कृत में, अधिकतम 100 शब्द)।	4
4.	सन्दर्भित पुस्तक से सम्बन्धित बहुविकल्पीय प्रश्न।	2

खण्ड–घ (निबन्ध)

विभिन्न विषयों पर संस्कृत में निबन्ध (10 पंक्तियाँ)–संस्कृत साहित्य, जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य शिक्षा, यातायात के नियम आदि। 10 अंक

खण्ड–ङ (अलंकार)

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में– उपमा तथा रूपक। 3 अंक

खण्ड–च (व्याकरण)

1.	अनुवाद – ऐसे हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद जहाँ उपपद विभक्तियों का प्रयोग हो।	8
2.	कारक तथा विभक्ति।	3
3.	समास।	3
4.	सन्धि ।	3

5.	शब्दरूप।	3
6.	धातुरूप।	3
7.	प्रत्यय।	2
8.	वाच्य परिवर्तन।	2

निर्धारित पुस्तकें एवं पाठ्यवस्तु

खण्ड–क (गद्य)

महाकविबाणभट्टप्रणीतकादम्बरी–सारभूता, 'चन्द्रापीडकथा' का उत्तरार्द्ध भाग–'सा तु समुत्थाय महाश्वेतां .... आगन्तव्यम्'' इत्यादिश्य व्यसर्जयत्' तक।

खण्ड–ख (पद्य)

महाकविकालिदासप्रणीतम्–रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीयः सर्गः)
श्लोक संख्या 41 से 64 तक।

खण्ड–ग (नाटक)

महाकविकालिदासप्रणीतम्–अभिज्ञानशाकुन्तलम् (चतुर्थोऽङ्कः)–(आकाशे) रम्यान्तरः कमलिनीहरितैः ..... इत्यादि श्लोक से अंक की समाप्ति तक।

खण्ड–घ (निबन्ध)

विभिन्न विषयों पर संस्कृत में निबन्ध (10 पंक्तियाँ) (संस्कृत–साहित्य, जनसंख्या, पर्यावरण, स्वास्थ्य–शिक्षा, यातायात के नियम आदि विषयों पर निबन्ध)

खण्ड–ङ (अलंकार)

निम्नलिखित अलंकारों की सामान्य परिभाषा (हिन्दी या संस्कृत में) अथवा उदाहरण संस्कृत में – उपमा तथा रूपक।

खण्ड–च (व्याकरण)

1. अनुवाद –

ऐसे हिन्दी वाक्यों का संस्कृत में अनुवाद जहाँ उपपद विभक्तियों का प्रयोग हो।

2. कारक तथा विभक्ति –

निम्नलिखित सूत्रों तथा वार्तिकों के आधार पर कारकों तथा विभक्तियों का ज्ञान –

(क) चतुर्थी विभक्ति (सम्प्रदान कारक) ।

(1) कर्मणा यमभिप्रैति स सम्प्रदानम् ।
(2) चतुर्थी सम्प्रदाने।
(3) रूच्यर्थानां प्रीयमाणः।
(4) क्रुधद्रुहेर्ष्यासूयार्थानां यं प्रति कोपः।
(5) नमः स्वस्तिस्वाहास्वधाऽलंवषड्योगाच्च।

(ख) पंचमी विभक्ति (अपादान कारक)

(1) ध्रुवमापायेऽपादानम्।
(2) अपादाने पंचमी।
(3) भीत्रार्थानां भयहेतुः।

(ग) षष्ठी विभक्ति (सम्बन्ध कारक)

(1) षष्ठी शेषे।
(2) षष्ठी हेतुप्रयोगे।

(घ) सप्तमी विभक्ति (अधिकरण कारक)

(1) आधारोऽधिकरणम्।
(2) सप्तम्यधिकरणे च।
(3) यतश्च निर्धारणम्।

3. समास –

निम्नांकित समासों की परिभाषा अथवा संस्कृत में विग्रहसहित समास का नाम।
(1) द्वन्द्वः, (2) अव्ययीभावः, (3) द्विगुः।

4. सन्धि–सन्धि, सन्धिविच्छेद, नामोल्लेख तथा नियम ज्ञान।

निम्नलिखित सूत्रों के अनुसार सन्धियों का उदाहरणसहित ज्ञान।

(क) व्यंजन सन्धि या हल् सन्धि– (1) स्तोः श्चुना श्चुः, (2) ष्टुना ष्टुः, (3) झलां जशोऽन्ते, (4) खरि च, (5) मोऽनुस्वारः,

(ख) विसर्ग सन्धि– (1) विसर्जनीयस्य सः, (2) ससजुषो रुः, (3) हशि च, (4) खरवसानयोर्विसर्जनीयः,

5. **शब्दरूप–**

(अ) **नपुंसक लिंग** – गृह, वारि, दधि, मधु, नामन्, मनस्,।

(आ) **सर्वनाम** – सर्व, तद्, यद्, किम्, युष्मद्, अस्मद्,एतत्, भवत्।

(इ) 01 से 100 तक संख्यावाचक शब्द तथा कति के रूप।

6. **धातुरूप–** निम्नलिखित धातुओं के लट्, लङ्, लोट्, विधिलिंग एवं लृट् लकार में रूप।

(अ) आत्मनेपद्– लभ्, वृध्, शी, सेव्।

(आ) उभयपद– नी, याच्, दा, ग्रह्, ज्ञा,।

7. **प्रत्यय–** ल्युट्, ण्वुल्, अनीयर्, टाप्, ङीष्, तुमुन्, क्त्वा।

8. **वाच्यपरिवर्तन–** वाक्यों में कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य एवं भाववाच्य पदों का वाच्यपरिवर्तन।

---

30 प्रतिशत कम किया गया पाठ्यक्रम–

खण्ड–क (गद्य)

चन्द्रापीडकथा

निर्गतायां केयूरकेण सह.....आनन्दस्य अध्यगच्छन्।

खण्ड–ख (पद्य)

रघुवंशमहाकाव्यम् (द्वितीय सर्ग)

श्लोक संख्या 65–75 तक।

खण्ड–च (व्याकरण)

कारक एवं विभक्ति– चतुर्थी विभक्ति– स्पृहेरीप्सितः, पंचमी विभक्ति– जुगुप्साविरामप्रमादार्थानामुपसंख्यानम्(वा0)।, आख्यातोपयोगे। षष्ठी विभक्ति– क्तस्य च वर्तमाने, षष्ठी चानादरे। सप्तमी विभक्ति– साध्वसाधुप्रयोगे च(वा0)

व्यंजन सन्धि– झलां जश् झशि, तोर्लि, अनुस्वारस्य ययि परसवर्णः।

विसर्ग सन्धि– अतो रोरप्लुतादप्लुते, वा शरि, रो रि, ढ्रलोपे पूर्वस्य दीर्घोऽणः।

शब्दरूप– नपुंसक लिंग– जगत्, ब्रह्मन्, धनुष।

सर्वनाम– इदम्, अदस्।

धातुरूप– आत्मनेपद– भाष्, विद्।

उभयपद– चुर्, श्रि, क्री, धा।